आदिवासियों के लिए कोषों के उपयोग का अनिवार्य प्रावधान किया गया है। संसाधनों की कोई कमी नहीं होने के बावजूद अनुसूचित जनजातियों के रोजगार के योग्य युवाओं को उनकी जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुरूप विभिन्न पेशों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना एक बड़ी चुनौती है।

निष्कर्ष - मध्य प्रदेश एवं केन्द्रीय सरकारों की योजनाओं और कार्यक्रमों में अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास पर हमेशा जोर दिया गया है। लेकिन राज्यों में इस दिशा में हुई प्रगति में काफी असमानता है। आँकड़ों से जाहिर है कि अन्य समुदायों की तुलना में अनुसूचित जनजातियाँ आर्थिक तौर पर ज्यादा पिछड़ी हैं। अनुसूचित जनजातियों की गरीबी रेखा से नीचे की ज्यादातर आबादी भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की है। उनके पास उत्पादक संपत्तियाँ बहुत कम या बिल्कुल ही नहीं हैं।

सरकार ने अनुसूचित जनजातियों की समस्याओं की पहचान करते हुए विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलकदमियों के जरिए उनके समाधान के तौर-तरीके तैयार किए हैं। जनजातियों की भागीदारी पर आधारित स्वशासन की एक ऐसी प्रणाली को लोकप्रिय बनाने की जरूरत है जिसमें इस समुदाय के सदस्य संसाधनों का खुद प्रबंध कर अपनी नियति स्वयं निर्धारित करें। इससे जनजातियों का उनकी भागीदारी और उनके प्रबंधन वाली विकास प्रक्रिया में सशक्तीकरण होगा। उचित स्थानों पर प्राइमरी स्कूलों और आवासीय विद्यालयों जैसी शैक्षिक अवसंरचना के निर्माण का कदम सराहनीय है। लेकिन अनुसूचित क्षेत्रों में आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन के माध्यम से अनुसूचित जनजातियों के युवाओं की योग्यता और ज्ञान के आधार को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जाने चाहिए। आदिवासी समुदाय का बड़ा हिस्सा आजीविका के लिए छोटे वनोपजों और कम उत्पादकता वाली कृषि पर निर्भर करता है। लिहाजा, उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने तथा जनजातीय उत्पादों को संवहनीय ढंग से बाजार से जोड़ने के प्रयास किए जाने चाहिए। आखिरी महत्वपूर्ण बात यह कि अनुसूचित जनजातियों के उत्थान की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए विभागीय सहयोग, तालमेल और एकजुटता की आवश्यकता है।

****

संदर्भ स्रोत:-

1. जनसम्पर्क विभाग मध्य प्रदेश द्वारा जारी वर्ष 2025
2. जनजातीय कार्य विभाग मध्य प्रदेश वर्ष 2015
3. गौतम मरकाम, जनजातियों की समस्याएं एवं निदान, (आलेख) 2025 https://www.allgk.in/cg-gk-cgpsc-and-vyapam-gk/
4. रावर्ट चैम्बर्स(1988) पुटिंग द पीपुल फर्स्ट, रूरल डेवलपमैंट लागमैन
5. ब्रार जे एस (1983) पोलिटिक्स इकोनामी आफ रूरल डेवलपमेंट, एलाइड पब्लिकेशन नई दिल्ली
6. दक टी एम (1982) सोशल इनइक्वालिटी एण्ड रूरल डेवलपमैंट नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
7. अजीत दाण्डा (1984)स्टडीज ऑन रूरल डेवलपमैंट एक्सपेरियेन्स एण्ड इश्यूज इंटर इंडिया पब्लिकेशन
8. गिलवर्ट इटन (1985) मीटिंग विथ पीजेन्टस रूरल डेवलपमैंट इन एशिया सेज नई दिल्ली
9. एस.सी.जैन(1985) रूरल डेवलपमैंन्ट इन्स्टीट्यूशंस एण्ड स्टेप्टजी, रावत पब्लिकेशंस
10. इन्दु माथुर (1982) चेंज इन रूरल सोसाइटी

हिन्दी की आधुनिक कविता में राम

डॉ. पी.एम.आर. जयन्ती
प्राध्यापक, हिंदी विभाग
एस.के.आर. एवं एस.के.आर. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय (स्वायत्त) कडप्पा (आंध्र प्रदेश)

मनुष्य जाति को सन्मार्ग की और प्रेरित करने में युग युगांतर से राम के चरित्र ने मार्गदर्शक की भूमिका अदा की है। राम के चरित्र में समग्र भारतीय संस्कृति मूर्तिमान हो उठी है। उनके व्यक्तित्व को आधार बनाकर विभित्र भारतीय भाषाओं में अनेक कवियों ने श्रेष्ठ साहित्य की रचना की है और उसमें लोकमंगल की साधना की है। आधुनिक काव्य में भी विभिन्न भारतीय भाषाओं सहित हिन्दीभाषा में राम के चरित्र पर आधारित ऐसे अनेक काव्यों की रचना हुई है जिनमें रचनाकारों ने परिवर्तित युगीन परिवेश के अनुसार परंपरागत कथा को नए आर्थों से संपन्न किया है। ऐसे काव्यों में अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध के वैदेही वनवास, मैथिलीशरण गुप्त के साकेत और पंचवटी, बालकृष्ण शर्मा नवीन के उर्मिला, बलदेव प्रसाद मिश्र के कौशल किशोर, साकेत संत और राम राज्य, सुमित्रानंदन पंत के पुरुषोत्तम राम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के राम की शक्तिपूजा, श्री नरेश मेंहता के संशय की एकरात, प्रवाद पर्व और शबरी, भारतभूषण के राम की जल समाधि, लक्ष्मीकांत वमी के चित्रकूट चरित्र, डॉ जगदीश गुप्त के शंबुक,डॉ . महेंद्र कार्तिकेय के प्रभ या तमु परात्पर एवं महेशचंद्र शुक्ल के छंद रामायण जैसे कई छोटे- बड़े –काव्य उल्लेखनीय हैं. इनमें "वैदेही वनवास' और 'साकेत" की पृष्टभूमि इस अर्थ में लगभग एक समान है कि कवियां में अपने युग की परिस्थितियों एवं आंदोलनों के प्रभाव ग्रहण करते हुए रामकथा के पात्रों के चरित्र में नवयुग के लिए आवश्यक आदर्शों की उद्भावना की. इन दोनो काव्यों में राम को एक ऐसे महापुरुष के रूप में चित्रित किया गया है जिसमें समष्टि के लिए व्यष्टि का बलिदान कर दिया. साकेत के राम का आदर्श है -

"निज हेतु बरसता नहीं व्योम से पानी
हम हो समष्टि के लिए व्याष्टि बलिदानी ।"

इसी प्रकार वैदेही वनवास के राम जनता-जनार्दन के प्रति नि:स्वार्थ भाव से समर्पित दिखाई देते हैं.

" गौरव क्या है?
जन भार वहन करना ही
सुख क्या है
बढ़कर दु:ख सहन करना ही ."

गुप्त जी ने अपने काव्य पंचवटी में सूर्पनखा प्रसंग को आधार बनाया है . इसमें एक ओर तो तत्कालीनसमस्याओं पर कवि ने पाठक ध्यान केंद्रित किया है तथा दूसरी ओर सीता और लक्ष्मण के चरित्रों में राष्ट्रीय परिवर्तन के अनुरूप आधुनिकता का समावेश किया है।

बालकृष्ण शर्मा नवीन ने काव्य 'उर्मिला' में राम को एक ऐसे क्रांति धर्मी मनुष्य के रूप में चित्रित किया है जो युगप्रवर्तक के रूप में हमारे सामने आते हैं। इस काव्य की भूमिका में कवि ने इसके वैशिष्ट्य को रेखांकित करते हुए कहा है "मेरी इस उर्मिला में पाठकों को रामायण की कथा नहीं मिलेगी। रामायणी कथा से मेरा अर्थ है – क्रम से राम लक्ष्मण, जन्म से लगातार रावण विजय और फिर अयोध्या आगमन तक की घटनाओं का वर्णन. ये घटनाएँ भारत वर्ष में इतनी अधिक

सुपरिचित हैं कि इनका वर्णन करना मैंने उचित नहीं समझा इस ग्रन्थ को मैंने विशेषकर मन: स्तर पर होने वाली क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का दर्पण बनाने का बनाने का प्रयास किया है.

रामायणीय घटनाओं का राम, सीता, सुमित्रा और विशेषकर लक्षण और उर्मिला के मनो पर क्या प्रभाव पड़ा. वे इन घटनाओं के प्रति किस प्रकार प्रतिकृत हुए आदि का वर्णन ही इस ग्रंथ का विषय बन गया है।" इस काव्य की विशेषता कवि के इस दृष्टिकोण में निहित है कि-

"नर को नारायण कर देना
यही राम की लीला है."

बलदेव प्रसाद मिश्र ने अपने राम काव्यों में तुलसी के राम को नवीन युग परिवेश में ढालकर प्रस्तुत किया है. उनके काव्य "कौशल किशोर में राम को आर्य संस्कृति के उद्धार करता के रूप में चित्रित किया गया है। उनके चरित्र में योग समृद्धि सम्पति, राज्य त्याग और प्रवृत्ति ,निवृत्ति जैसे विरोधी भावों का सामंजस्य दिखाई देता है.

"भोग योग समृद्धि-संपत्ति राज-त्याग समान,
या प्रवृति-निवृत्ति वह ऐक्य शोभावान ।"

इसी प्रकार 'साकेत संत मेंकवि ने राम को एक ऐसे स्वप्न दृष्टा महानायक के रूप में प्रस्तुत किया है जो समस्त भारतवर्ष का एक सूत्र में पिरोकर अनार्यों से म भी सहयोग लेते हुए आर्य संस्कृति का विकास करसके -

"कि जिससे विकसे आर्यावर्त
तुम्हारा भारत बने अभंग."

अपने तीसरे राम काव्य राम राज्य भी बलदेव प्रसाद मिश्र जी ने राम के चरित्र में पूर्ण मनुष्यत्व के साथ –साथ प्रत्यक्ष विष्णु भाव का भी समावेश किया है और मनुष्यता के लिए महा सत्य और आराध्य बताया है –

"मनुष्य ही महासत्य मनुष्य मन के लिए
वहीपरम आराध्य वही प्रत्यक्ष विष्णु."

इस काव्य की भूमिका में कवि ने काव्य रचना के युग सापेक्ष उद्देश्य की ओर पाठकों का ध्यान खीचते हुए लिखा है कि-'कथा का उद्देश्य केवल कथा नहीं किन्तु राष्ट्रीय एकीकरण और सुराज्य स्थापना से सम्बंधित राम के प्रयत्नों पर अपनी मति के अनुसार प्रकाश डालना है .

पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की लम्बी कविता राम की शक्तिपूजा का इस युग मे राम काव्यो के बीच अद्वितीय स्थान है। निराला जी ने राम को एक संघर्षशील मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया है।आदि कवि बाल्मीकि से लेकर आधुनिक युग के कवियों तक ने राम के प्रति अनेक प्रकार के दृष्टिकोण प्रस्तुत किये हैं. परन्तु निराला जी के राम का व्यक्तित्व उन सबसे पृथक और विशिष्ट है निराला के काव्य में राम अपनी अपराजेयता के प्रति दिव्य आश्वस्ति से भरपूर चित्रित नहीं किये गए हैं बल्कि कवि न उन्हें पराजय के भय से चिन्तित व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। जीवन भर विरोध झेलने और साधानहीनता की स्थिति में भटकाने वाले मध्यवृत्त व्यक्ति तथा स्वयं कवि का व्यक्तित्व राम के माध्यम से अभिव्यंजित हुआ है-

धिक जीवन जो पाता ही आया विरोध
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

प्रकृति के सुकुमार कवि माने जाने वाले पं. सुमित्रानन्दन पंत ने अपने महाकाव्य पुरूषोत्तम राम मे राम को विष्व चेतना के प्रतीक के रूप में रूपायित किया है। जिनका अवतार ही मनुष्य के हृदय में नवयुग के निर्माण करने के लिए हुआ है। राम के चरित्र की इस नविन परिकल्पना की प्रक्रिया के संबंध में डॉ. ब्रह्म शंकर पुरूषोत्तम व्यास यह स्थापना है पंत जी ने काव्य में एक ओर तो कोरे आध्यात्म भाव का खण्डन किया है। दूसरी ओर मार्क्सवाद और गाँधीवाद की भी। उनका कथन है कि- "भू-नर के सृजन के लिए उसने अद्वैत और मार्क्सवाद, गाँधीवाद अध्यात्मवाद,और भौतिकवाद का समन्वय किया.पन्त जी के इस काव्य का नायक राम अखिल विश्व में मानवीय साम्राज्य स्थापित करने में संघर्षरत दिखाई देते हैं.-

"अभी जूझना मुझको निर्मम वर्तमान से.
मानवीय साम्राज्य विश्व में स्थापित करने."

श्री नरेश मेहता नें 'संशय की एक रात' में राम को प्रज्ञा का प्रतीक पुरुष बनाया है.इस काव्य में कवि ने राम को एक साथ दृष्टा और सृष्टा की तरह प्रस्तुत किया है.इस काव्य के राम सामने प्रस्तुत युद्ध की पूर्व बेला में कभी समुद्र तट पर उदास मन से टहलते हैं,कभी चिंताग्रस्त होकर बैठ जाते हैं और कभी ज्वार का जल उन्हें भिगो जाता है.शांति स्थापित करने के लिए भेजे गए दूत के असफल होने और शांति वार्ता के अनेक बार टूट जाने पर भी राम युद्ध को टालना चाहते हैं. आधुनिक काल के कवि ने दो विश्व युद्धों के रूप में जिस विभीषिका का साक्षात्कार किया है उसी के कारण उसने राम के चरित्र में यह समकालीन द्वंद्व उपस्थित किया है.

" मै केवल युद्ध को बचाना चाहता हूँ बन्धु,
मानव में जो श्रेष्ट विराजा है
उसको ही
हाँ उसको ही जगाना चाहता हूँ."

नरेश जी अपने एक एनी काव्य 'प्रवाद पर्व' में सीता निर्वासन की कथा को मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रस्तुत किया है.इस काव्य में राम की अनाशक्ति की भावना की व्याख्या की गई है. लोकहित को ध्यान में रखते हुए राम एक साधारण अनाम व्यक्ति के सन्देह को ध्यान में रखते हुए अपनी देवी तुल्य तेजस्वी चरित्र वाली पत्नी का त्याग तो अवश्य करते हैं परन्तु मन से उन्हें कभी त्याग नहीं पाते, तथा अपने इस कार्य के लिए सीता से क्षमा याचना भी करते हैं.

इसी प्रकार कवि ने अपने शबरी नामक खंड काव्य में शबरी के माध्यम से एक निम्न वर्ग की स्त्री की आध्यात्मिक संघर्ष की गाथा का वर्णन करते हुए राम के समाज सुधारक और करांति द्रष्टा स्वरूप को प्रस्तुत किया है. डॉ. जगदीश गुप्त ने अपने काव्य शम्बूक में शुद्र ऋषि कहे गए शम्बूक को भूमि पुत्र की संज्ञा प्रदान की है.

निष्कर्ष ;- राम कथा पर आधारित हिंदी भाषा के आधुनिक काव्यों की यह चर्चा तब तक अधूरी रहेगी जब तक महेश चन्द्र शुक्ल कृत 'छंद रामायण' का उल्लेख न किया जाय. ब्रज भाषा में रचित छन्द रामायण में राम को पुरुषोत्तम, आदर्श और मर्यादाशील रूप में चित्रित किया गया है.

****